चाणक्य नीति दर्पण

आचार्य चाणक्य · 1905 खेमराज प्रति

अध्याय 1: मंगलाचरण और मूल सूत्र

VastuGuruji · vastuguruji.in

अध्याय 1

मंगलाचरण और मूल सूत्र · 17 श्लोक

श्लोक 1

प्रणम्य शिरसा विष्णुं त्रैलोक्याधिपतिं प्रभुम् ।

नानाशास्त्रोद्धृतं वक्ष्ये राजनीतिसमुच्चयम् ॥

> [illegible]

अर्थ

आचार्य चाणक्य अपने ग्रन्थ की शुरुआत त्रैलोक्य के स्वामी भगवान विष्णु को सिर झुकाकर प्रणाम करते हुए करते हैं। यह केवल औपचारिक मंगलाचरण नहीं — यह भारतीय ज्ञान-परम्परा का मूल सिद्धान्त है कि किसी भी

महान कार्य का प्रारम्भ ईश्वर-स्मरण से होना चाहिए। विष्णु संरक्षक हैं, स्थिरता के देवता हैं — और नीति-शास्त्र का उद्देश्य भी समाज में स्थिरता और संरक्षण लाना है।

"त्रैलोक्याधिपति" शब्द महत्त्वपूर्ण है। तीन लोक — स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल — अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि के अधिपति। चाणक्य संकेत देते हैं कि नीति केवल एक देश या एक समाज की नहीं, बल्कि सार्वभौमिक है। जो सिद्धान्त राजा के लिए सही है, वही सामान्य व्यक्ति के लिए भी, वही व्यापारी और साधक के लिए भी।

"नानाशास्त्रोद्धृतं" — अनेक शास्त्रों से उद्धृत। यह विनम्रता की पराकाष्ठा है। चाणक्य कहते हैं कि यह ज्ञान मेरा अपना नहीं — यह वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और पूर्व आचार्यों के अनुभव का सार है। मैंने केवल संकलित किया है। यह भारतीय गुरु-परम्परा का स्वर्णिम लक्षण है — ज्ञान को परम्परा से प्राप्त मानना, अपनी मौलिक उपलब्धि नहीं।

"राजनीतिसमुच्चयम्" — राजनीति का संग्रह। यहाँ "राजनीति" का अर्थ केवल राजा का शासन नहीं, बल्कि **व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की नीति**। हर व्यक्ति अपने जीवन का राजा है, और उसे अपने जीवन को सही दिशा देने के लिए नीति चाहिए। यही चाणक्य की क्रान्तिकारी दृष्टि है — नीति को राजमहल से निकालकर सामान्य गृहस्थ तक पहुँचाना।

इस मंगलाचरण से हमें तीन शिक्षाएँ मिलती हैं — पहली, हर शुभ कार्य का प्रारम्भ ईश्वर-स्मरण से करें। दूसरी, ज्ञान को विनम्रता से ग्रहण करें, अहंकार से नहीं। तीसरी, नीति केवल राजा की नहीं — हर मनुष्य की दैनिक आवश्यकता है। यदि हम अपने जीवन में इन तीन सूत्रों को अपनाएँ — तो किसी भी कार्य की सफलता निश्चित है।

❓ आधुनिक उदाहरण

ज़रा एक successful CEO को देखिए जो company की सालाना meeting शुरू करता है। करोड़ों का turnover, हज़ारों employees — फिर भी वह पहले अपने mentors, team और ग्राहकों का आभार जताता है, फिर आगे बढ़ता है। यही चाणक्य का मंगलाचरण है।

जो हर बड़े काम की शुरुआत विनम्रता और आभार से करता है, उसका अहंकार नियंत्रण में रहता है। एक student जो परीक्षा से पहले दो मिनट शान्त होकर माता-पिता और गुरु को याद करता है, वह दबाव में भी स्थिर रहता है। वहीं 'मैंने अकेले किया' के भाव से शुरू करने वाला पहली असफलता पर टूट जाता है। शुरुआत का भाव पूरे कार्य की दिशा तय करता है।

2श्लोक 2

अधीत्येदं यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः।

धर्मोपदेशविख्यातं कार्याकार्यं शुभाशुभम् ॥

> [illegible]

अर्थ

चाणक्य कहते हैं कि जो व्यक्ति इस नीति-शास्त्र का यथाविधि अध्ययन करता है, वह "सत्तम" — श्रेष्ठ मनुष्य — बन जाता है। "अधीत्य" शब्द में गहराई है। यह केवल पढ़ना नहीं — पढ़कर अनुसरण करना है। आज के युग में हम ग्रन्थ पढ़ते तो हैं, परन्तु जीवन में उतारते नहीं। शास्त्र का सच्चा अध्ययन वही है जो आचरण में बदले।

"यथाशास्त्रं" अर्थात् शास्त्र के अनुसार — मनमाने अर्थ निकालकर नहीं। यह अनुशासन की बात है। बहुत-से लोग शास्त्र के अपनी सुविधा के अनुसार अर्थ करते हैं और स्वयं को सही ठहराते हैं। चाणक्य कहते हैं — शास्त्र को विकृत मत करो, उसे ज्यों-का-त्यों समझो।

"सत्तम" — सत् + तम, अर्थात् सबसे श्रेष्ठ सज्जन। चाणक्य के अनुसार श्रेष्ठता धन-वैभव से नहीं, सोने-चाँदी से नहीं — बल्कि **विवेक से** आती है। और विवेक केवल पढ़ने से नहीं, अनुभव और अनुसरण से जागृत होता है।

"धर्मोपदेशविख्यातं" — धर्म के उपदेश से प्रसिद्ध। चाणक्य की नीति केवल लौकिक नहीं, बल्कि धर्म-संगत है। वे कहीं भी अधर्म को सहन नहीं करते। उनकी बुद्धिमत्ता धर्म की सीमा में रहती है। यह भारतीय नीति-शास्त्र की विशेषता है — चालाकी और चतुराई के बीच की रेखा। चालाकी अधर्म है, चतुराई धर्म-संगत बुद्धिमत्ता।

"कार्याकार्यं शुभाशुभम्" — क्या करना है, क्या नहीं ; क्या शुभ है, क्या अशुभ। यही नीति का मूल प्रश्न है। हर पल हमारे सामने यह प्रश्न आता है — यह काम करूँ या न करूँ ? यह बोलूँ या न बोलूँ ? इस मित्रता को निभाऊँ या तोड़ूँ ? चाणक्य कहते हैं — शास्त्र पढ़ने वाला इन सब प्रश्नों का उत्तर अपने भीतर पाता है।

आज के युग में यह श्लोक और भी प्रासंगिक है। सूचना का अतिरेक है, परन्तु विवेक की कमी। चाणक्य का सन्देश स्पष्ट है — पढ़ो, समझो, और जीवन में उतारो। केवल तभी ज्ञान सार्थक होता है।

[illegible] आधुनिक उदाहरण

दो लोग एक ही business book पढ़ते हैं। एक उसे पढ़कर एक quote share करके भूल जाता है ; दूसरा एक idea उठाकर अगले हफ़्ते अपने काम में लागू कर देता है। छह महीने बाद दोनों की ज़िंदगी में ज़मीन-आसमान का फ़र्क होता है। चाणक्य का 'अधीत्य' यही है — पढ़ना नहीं, उतारना।

आज हम information के समुद्र में डूबे हैं — podcasts, videos, courses। पर ज्ञान तब तक बेकार है जब तक आचरण न बदले। जो डॉक्टर सिगरेट के नुकसान जानकर भी पीता रहे, उसका ज्ञान उसे नहीं बचाता। सच्चा 'सत्तम' वही है जिसका पढ़ा हुआ उसके फ़ैसलों में दिखे।

श्लोक 3

तदहं सम्प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।

येन विज्ञातमात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रपद्यते ॥

> [illegible]

अर्थ

चाणक्य अपने ग्रन्थ-लेखन का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं — "लोकानां हितकाम्यया" — सम्पूर्ण लोक के हित की कामना से। वे यह नहीं कहते कि मैं अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिए लिख रहा हूँ। न ही धन या प्रसिद्धि की कामना से। केवल लोक-कल्याण के लिए।

यह भारतीय परम्परा की मूल भावना है — "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय"। हर सच्चा साधक, हर सच्चा विद्वान, अपने ज्ञान को समाज के लिए समर्पित करता है। चाणक्य इसी परम्परा का अनुसरण करते हैं।

"येन विज्ञातमात्रेण" — जिसके केवल जान लेने से। चाणक्य का आत्म-विश्वास देखिए। वे कहते हैं कि इस ग्रन्थ का अध्ययन मात्र पर्याप्त है। बार-बार पढ़ने या कण्ठस्थ करने की आवश्यकता नहीं। समझ लेना ही पर्याप्त है। यह तभी सम्भव है जब लेखक ने हर शब्द को गहराई से चुना हो।

"सर्वज्ञत्वं प्रपद्यते" — सर्वज्ञता प्राप्त हो जाती है। यहाँ "सर्वज्ञत्व" का अर्थ ब्रह्मांड के हर तथ्य का ज्ञान नहीं। यह अर्थ है — **जीवन के हर परिस्थिति में सही निर्णय लेने की क्षमता**। यह व्यावहारिक सर्वज्ञता है।

कोई व्यापारी हो, राजा हो, शिक्षक हो, गृहिणी हो, विद्यार्थी हो — हर एक के सामने प्रतिदिन ऐसे प्रश्न आते हैं जिनका उत्तर पाठ्यपुस्तकों में नहीं मिलता। यह व्यावहारिक ज्ञान कहाँ से आता है ? चाणक्य कहते हैं — नीति-शास्त्र से। जो व्यक्ति नीति को आत्मसात कर ले, वह जीवन के हर मोड़ पर सही निर्णय ले सकता है।

आधुनिक मनोविज्ञान में इसे "wisdom" कहा जाता है — विवेक। ज्ञान (knowledge) और बुद्धिमत्ता (intelligence) से अलग — यह तीसरा स्तर है। चाणक्य का दावा है कि उनका ग्रन्थ इसी विवेक का दर्पण है। और इतिहास साक्षी है कि उन्होंने अपने जीवन में इसी विवेक का उपयोग करके चन्द्रगुप्त मौर्य को नन्द-वंश के विरुद्ध विजय दिलाई। उनके सिद्धान्त शब्दों तक सीमित नहीं — वे जीवन-सिद्ध हैं।

[illegible] आधुनिक उदाहरण

आज के सबसे बड़े teacher वही बने जिन्होंने अपना ज्ञान खुलकर बाँटा — YouTube पर मुफ़्त पढ़ाने वाले शिक्षक, open-source लिखने वाले programmers, अपने नुस्खे share करने वाले किसान। पैसा और शोहरत

उनके पीछे-पीछे आए, क्योंकि नीयत 'लोक-हित' की थी।

जो ज्ञान को तिजोरी में बंद रखता है, वह वहीं रुक जाता है ; जो बाँटता है, वह और सीखता है — क्योंकि सिखाना खुद सबसे गहरा सीखना है। किसी भी team का वह senior जो अपना knowledge juniors को दिल खोलकर देता है, अक्सर वही सबसे तेज़ी से आगे बढ़ता है।

श्लोक 4

मूर्खशिष्योपदेशेन दुष्टस्त्रीभरणेन च।

दुःखितैः सम्प्रयोगेण पण्डितोऽप्यवसीदति॥

> [illegible]

अर्थ

चाणक्य की यह वाणी कठोर परन्तु सत्य है। वे कहते हैं — तीन परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि उनमें फँसा हुआ पण्डित भी अवसाद में चला जाता है, अपनी विद्वत्ता खो देता है — मूर्ख शिष्य को पढ़ाना, दुष्ट स्त्री का भरण-पोषण करना, और दुखी लोगों का संग।

पहली स्थिति — मूर्ख शिष्य। शिक्षक की सबसे बड़ी पीड़ा यह नहीं कि उसका शिष्य कमजोर है, बल्कि यह कि उसकी समझाई बात भी समझ में नहीं आती। बार-बार समझाने पर भी न समझे। हर बार वही गलती दोहराए। ऐसे शिष्य से पण्डित का धैर्य टूट जाता है। उसका समय व्यर्थ जाता है। उसकी ऊर्जा क्षीण होती है।

दूसरी स्थिति — दुष्ट स्त्री। यहाँ "दुष्ट" का अर्थ है — कलहप्रिय, झगड़ालू, असंतुष्ट। ऐसी पत्नी का भरण-पोषण करते हुए कोई भी विद्वान् मानसिक शान्ति नहीं पा सकता। घर का वातावरण कलह से भरा रहे, तो अध्ययन-चिंतन कैसे हो ? यह श्लोक केवल पत्नी पर नहीं — किसी भी दुर्जन सम्बन्ध पर लागू होता है। चाहे वह माता हो, पिता हो, मित्र हो — यदि वह दुर्जन है, तो उसके सान्निध्य में बुद्धिमत्ता क्षीण होती है।

तीसरी स्थिति — दुखी लोगों का संग। यह सबसे सूक्ष्म है। दुखी लोगों से सहानुभूति रखना चाहिए, उनकी सहायता करनी चाहिए। परन्तु निरन्तर दुखी लोगों के संग में रहना — स्वयं को भी दुखी बना देता है। पण्डित की ऊर्जा रचनात्मक कार्यों में होनी चाहिए, न कि दूसरों के दुख में डूबे रहने में।

चाणक्य का सन्देश यह नहीं है कि सहायता न करें। उनका सन्देश है — **सहायता करते हुए भी अपनी मानसिक स्वतन्त्रता बनाए रखें।** हर पल किसी और के दुख में डूबकर अपनी सृजनशीलता नष्ट न करें। यह आधुनिक मनोविज्ञान का "emotional contagion" सिद्धान्त है — जो भावनाएँ हम बार-बार देखते हैं, वे हमारी अपनी बन

जाती हैं।

श्रेष्ठता बचाने के लिए — सही संग चुनिए। यह नीति का प्रथम पाठ है।

? आधुनिक उदाहरण

सोचिए एक बेहतरीन teacher को, जिसका शिष्य हर बार वही गलती दोहराता है और सीखने की कोई भूख नहीं रखता। कुछ महीनों में शिक्षक का उत्साह ही ख़त्म हो जाता है — यह बच्चे की नहीं, teacher की ऊर्जा का क्षय है। यही 'मूर्ख शिष्य' है — जिसमें सीखने की इच्छा ही न हो।

ठीक वैसे ही, एक toxic रिश्ता या हमेशा शिकायत करने वाले नकारात्मक लोगों की संगति सबसे मज़बूत इंसान को भी अंदर से खोखला कर देती है। Research भी कहती है — हम अपने आस-पास के पाँच लोगों का औसत बन जाते हैं। चाणक्य 2300 साल पहले यही चेता रहे थे : अपनी ऊर्जा किसे दे रहे हो, यह देख लो।

5श्लोक 5

दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः।

ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः॥

> ? ??? ???????-?????? ??????????

अर्थ

चाणक्य चार ऐसी स्थितियाँ बताते हैं जो मृत्यु के समान हैं — दुष्ट पत्नी, धोखेबाज मित्र, उत्तर देने वाला नौकर, और साँप वाले घर में निवास। इन चारों में कोई भी हो — तो जीवन भयानक हो जाता है।

दुष्ट भार्या। घर शान्ति का स्थान है। यदि गृह-स्वामिनी ही कलह-कारी हो, तो घर नरक बन जाता है। पुरुष बाहर से थका-हारा आए और घर में कलह मिले — यह मानसिक मृत्यु है। यह श्लोक केवल पुरुषों के लिए नहीं — स्त्रियों के लिए भी समान रूप से लागू है। दुर्जन पति या दुर्जन परिवार — दोनों ही मानसिक रूप से नष्ट कर देते हैं।

शठ मित्र। "शठ" अर्थात् धोखेबाज, छली, स्वार्थी। मित्रता का मूल विश्वास है। जब मित्र ही धोखा दे — तो मानवता में विश्वास उठ जाता है। चाणक्य कहते हैं — ऐसे मित्र से दूर रहना ही सर्वोत्तम। मित्रता तोड़ने का साहस होना चाहिए, अन्यथा जीवन-भर का दुख।

उत्तरदायक भृत्य। यहाँ "भृत्य" का अर्थ केवल नौकर नहीं — हर वह व्यक्ति जो हमारी सेवा या सहायता के लिए नियुक्त है। यदि वह कर्तव्य के बजाय हर बात पर तर्क-वितर्क करे, हर आदेश का सामना करे — तो काम कैसे होगा ? चाणक्य के समय यह नौकर पर लागू था, आज यह कर्मचारी, सहयोगी, या सहायक पर लागू होता है। हर समय बहस करने वाला सहायक नहीं — कर्तव्य-निष्ठ सहायक चाहिए।

साँप वाला घर। यह प्रत्यक्ष भौतिक स्थिति है। जिस घर में साँप का बसेरा हो, वहाँ निरन्तर मृत्यु का भय बना रहता है। हर पल "कब डँसे" का डर। इस स्थिति में कोई भी जीवन नहीं जी सकता। यह "विषाक्त वातावरण" का प्रतीक है — कोई भी विषैला वातावरण मृत्यु के समान है।

निष्कर्ष — जीवन की गुणवत्ता पर्यावरण से तय होती है। हमारे चारों ओर के लोग, हमारी जगह, हमारा संग — यही हमारे भविष्य का निर्धारण करते हैं। चाणक्य कहते हैं — विवेकी मनुष्य ऐसी स्थितियों को पहचाने, और तुरन्त त्याग दे। संकोच में रहना मृत्यु को आमन्त्रण देना है।

⁉ आधुनिक उदाहरण

घर वह जगह है जहाँ इंसान थककर सुकून पाने आता है। पर अगर घर में ही रोज़ कलह हो, भरोसे का साथी पीठ पीछे धोखा दे, मदद करने वाला हर बात का उल्टा जवाब दे, और सिर पर हर वक़्त कोई अनदेखा ख़तरा मँडराता रहे — तो वह घर आराम नहीं, धीमा ज़हर बन जाता है।

आज की भाषा में: एक ऐसी नौकरी जहाँ boss रोज़ अपमान करे (साँप वाला घर), या एक दोस्त जो सामने मीठा और पीछे नुकसान करे (धोखेबाज मित्र) — ये 'ज़िंदा मौत' हैं। चाणक्य कहते हैं इन्हें पहचानो और समय रहते दूरी बनाओ, क्योंकि रोज़-रोज़ का यह घाव किसी बड़ी चोट से भी ख़तरनाक है।

श्लोक 6

आपदर्थे धनं रक्षेद् दारान् रक्षेद् धनैरपि ।

आत्मानं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि ॥

> ⁉ ???? ????????????????

अर्थ

चाणक्य की यह सूत्र-वाणी जीवन की प्राथमिकताओं का सोपान-क्रम स्पष्ट करती है। तीन स्तर हैं — धन, पत्नी (परिवार), और आत्मा। इनकी रक्षा का क्रम भी विशेष है।

पहला नियम — आपदा के लिए धन की रक्षा। भविष्य अनिश्चित है। बीमारी, बेरोजगारी, दुर्घटना, युद्ध — कब आ जाए, पता नहीं। इसलिए सम्पन्न समय में ही धन-संग्रह करना चाहिए। आज के युग में इसे "emergency fund" कहते हैं — संकट-कोष। चाणक्य ने यह सिद्धान्त 2300 वर्ष पहले दिया।

दूसरा नियम — परिवार की रक्षा के लिए धन भी त्यागें। यदि पत्नी या परिवार पर संकट है — तो धन-व्यय में संकोच न करें। बीमारी हो, शिक्षा हो, सुरक्षा हो — परिवार की भलाई के लिए धन गौण है। यहाँ चाणक्य "धनैरपि" शब्द से जोर देते हैं — "धन से भी" परिवार को बचाना है।

यह नियम बहुतों के लिए कठिन है। हम धन बचाने के चक्कर में परिवार पर निवेश नहीं करते। बच्चों की अच्छी शिक्षा, माता-पिता की उत्तम चिकित्सा, पत्नी की सुरक्षा — इन पर खर्च करने में हिचकिचाते हैं। चाणक्य कहते हैं — यह गलती है। धन परिवार के लिए है, परिवार धन के लिए नहीं।

तीसरा नियम — आत्मा की रक्षा के लिए धन और परिवार दोनों त्यागें। यह सबसे कठिन सिद्धान्त है। "आत्मा" का अर्थ केवल आध्यात्मिक आत्मा नहीं — यहाँ अर्थ है — स्वयं की मूल पहचान, स्वाभिमान, चरित्र, स्वास्थ्य, और स्वतन्त्रता।

यदि कोई स्थिति आपके चरित्र को नष्ट करती हो — धन और परिवार दोनों त्याग दें। यदि कोई सम्बन्ध आपके आत्म-सम्मान को कुचलता हो — उसे छोड़ें। यदि आपका स्वास्थ्य खराब हो रहा हो — काम भी छोड़ें। चाणक्य कहते हैं — स्वयं रहेंगे, तो धन भी कमाएँगे, परिवार भी बनाएँगे। स्वयं ही न रहे, तो सब निरर्थक।

आधुनिक भाषा में — पहले स्वयं को ऑक्सीजन मास्क लगाएँ, फिर बच्चों को। यह क्रम चाणक्य 2300 वर्ष पहले बता चुके थे। यह स्वार्थ नहीं — यह बुद्धिमत्ता है। निःस्वार्थ सेवा भी तभी सम्भव है जब स्वयं स्वस्थ हों।

⁉ आधुनिक उदाहरण

यह चाणक्य का सबसे practical life-rule है। पहला — बुरे वक़्त के लिए बचत रखो; lockdown में जिसने emergency fund रखा था, वही टिका। पर दूसरा नियम इससे ऊँचा है — जब परिवार पर संकट आए तो पैसा बचाना नहीं, पैसा लगाना है ; किसी अपने की जान बचानी हो तो सारी FD तोड़ देनी चाहिए।

और सबसे ऊँचा — जब बात आत्म-सम्मान और ज़मीर की हो, तो परिवार के दबाव के बावजूद सही खड़े रहना पड़ता है। एक कर्मचारी जो मोटी salary और घरवालों के दबाव के बाद भी गलत काम से इनकार कर दे, वही 'आत्मा की रक्षा' जीतता है। क्रम याद रखिए — पैसा, फिर परिवार, फिर ज़मीर ; ऊपर वाला हमेशा भारी।

7 श्लोक 7

आपदर्थे धनं रक्षेच्छ्रीमतां कुत आपदः ।

कदाचिच्चलते लक्ष्मीः सञ्चितोऽपि विनश्यति ॥

> [illegible]

अर्थ

चाणक्य पहले श्लोक की पुष्टि करते हुए एक प्रति-प्रश्न उठाते हैं और स्वयं उत्तर देते हैं। प्रश्न — "श्रीमानों को भी क्या आपदा आती है?" उत्तर — हाँ, क्योंकि लक्ष्मी चंचला है।

यह एक स्वाभाविक मानसिकता है। जो धनवान हैं, वे सोचते हैं — "हमें क्या आपदा? हमारे पास तो सब है।" यह भ्रम है। चाणक्य इसे सीधे चुनौती देते हैं। लक्ष्मी कभी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती। आज जिनके पास है, कल नहीं हो सकता।

इतिहास इसके अनेक उदाहरण देता है। राजा से रंक बनने की कहानियाँ हर युग में हैं। आज की भाषा में — सबसे धनी व्यक्ति भी एक रात में दिवालिया हो सकता है। शेयर बाजार का एक झटका, एक मुकदमा, एक राजनैतिक परिवर्तन, एक प्राकृतिक आपदा — सब कुछ बदल सकता है।

"कदाचित्" शब्द महत्त्वपूर्ण है — कभी-कभी। चाणक्य यह नहीं कह रहे कि हर श्रीमान् बर्बाद होगा। केवल यह कह रहे हैं कि सम्भावना है। और इसी सम्भावना के लिए तैयारी आवश्यक है।

"सञ्चितोऽपि विनश्यति" — सञ्चित धन भी नष्ट हो जाता है। बहुत-से लोग सोचते हैं कि बैंक में जमा धन सुरक्षित है। नहीं! महामन्दी, मुद्रास्फीति, युद्ध, बैंक का दिवाला — कई कारण हैं जिनसे सञ्चित धन भी नष्ट हो सकता है। चाणक्य का सन्देश है — कभी निश्चिन्त मत हो जाओ।

यहाँ एक गहरा आर्थिक सिद्धान्त छुपा है — **विविधीकरण (diversification)**। एक ही जगह सारा धन मत रखो। एक ही उद्यम पर सब कुछ मत लगाओ। एक ही व्यवसाय में सारी ऊर्जा मत लगाओ। चाणक्य का अर्थशास्त्र इसी की वकालत करता है।

एक और गहरा सन्देश — मनोवैज्ञानिक तैयारी। जो श्रीमान् आज अपनी समृद्धि पर अहंकार करते हैं, उन्हें यह श्लोक नम्र बनाता है। समृद्धि स्थायी नहीं — इसका बोध रखें। और जो आज दुखी हैं, उन्हें भी आशा मिलती है — स्थिति बदलेगी।

लक्ष्मी चंचला है — इसका भय भी आवश्यक है, इसकी आशा भी। चाणक्य दोनों दृष्टिकोण से इस सत्य को प्रस्तुत करते हैं।

[illegible] आधुनिक उदाहरण

2008 में दुनिया के बड़े-बड़े banks, जो 'too big to fail' कहलाते थे, हफ़्तों में डूब गए और कई अरबपति रातों-रात कंगाल हो गए। लक्ष्मी सचमुच चंचला है — वह किसी के घर स्थायी मेहमान नहीं।

इसका मतलब पैसे से नफ़रत नहीं, उस पर घमंड न करना है। जो अमीर बुरे दिनों के लिए तैयार रहता है, विनम्र रहता है, और कमाई का कुछ हिस्सा अच्छे कामों में लगाता है — वही टिकता है। पैसा आता-जाता है ; चरित्र और हुनर वह पूँजी है जो कोई मंदी नहीं छीन सकती।

श्लोक 8

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।

न च विद्यागमः कश्चित् न तं देशं समाश्रयेत् ॥

> ? ??? ??????? ???????

अर्थ

चाणक्य निवास-स्थान चुनने का सूत्र देते हैं। चार तत्त्व अनिवार्य हैं — सम्मान, आजीविका, सम्बन्धी, और विद्या-अध्ययन। यदि किसी स्थान पर इन चारों में से कोई एक भी नहीं — तो वह स्थान त्याज्य है।

सम्मान। यह जीवन का प्राण है। जिस स्थान पर हमारा अपमान होता हो, उपहास होता हो, हमें मूल्यहीन समझा जाता हो — वहाँ कितना भी सुख-सुविधा हो, मन को शान्ति नहीं मिलती। आत्म-सम्मान का त्याग करके जीना — मृत्यु से बदतर है।

वृत्ति। अर्थात् आजीविका। अपने भोजन और परिवार के पालन के लिए साधन। यदि किसी स्थान पर रोजगार नहीं — तो कितना भी सुन्दर हो, वह स्थान निरर्थक है। आज की भाषा में — जहाँ नौकरी या व्यापार के अवसर न हों, वहाँ नहीं रहना चाहिए। यह केवल अर्थ की बात नहीं — स्वावलम्बन की बात है।

बान्धव। सम्बन्धी, मित्र, परिचित। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। बिल्कुल अकेले रहना — मानसिक रूप से कठिन है। संकट के समय कोई न हो जो आपके लिए खड़ा हो — यह बहुत बड़ी कमजोरी है। ऐसा देश छोड़ना ही उचित है।

विद्यागम। शिक्षा का स्रोत। यदि किसी स्थान पर शिक्षा का अवसर नहीं, पढ़ाई-लिखाई का माहौल नहीं — तो वहाँ की अगली पीढ़ी अंधेरे में रहेगी। बच्चों का भविष्य नष्ट होगा। चाणक्य के लिए शिक्षा सर्वोच्च है — और शिक्षा के बिना कोई स्थान वासयोग्य नहीं।

आधुनिक सन्दर्भ में यह श्लोक अत्यन्त प्रासंगिक है। बहुत-से लोग किसी छोटे शहर में अटके रहते हैं — जहाँ न रोजगार है, न शिक्षा, न सम्बन्ध, न सम्मान। आदत और भय के कारण वे जगह नहीं बदलते। चाणक्य कहते हैं — गलत है। जहाँ ये चार नहीं, वहाँ ठहरना मूर्खता है।

निर्णय कठिन है, परन्तु निर्णय आवश्यक है। चाणक्य की नीति में संकोच नहीं — स्पष्टता है। जीवन की गुणवत्ता पर्यावरण से तय होती है। और पर्यावरण बदलने का अधिकार हर मनुष्य के पास है।

? आधुनिक उदाहरण

आज लाखों युवा नौकरी के लिए नए शहर जाते हैं — चाणक्य का यह सूत्र उन्हीं के लिए है। किसी जगह टिकने से पहले चार चीज़ें देखो : क्या यहाँ मेरी इज़्ज़त है ? क्या कमाई का अच्छा मौका है ? क्या कोई अपना/सहारा है ? और क्या यहाँ मैं कुछ नया सीख सकता हूँ ?

अगर किसी शहर में मोटी salary तो है पर रोज़ अपमान और अकेलापन है, तो वह जगह लंबे समय में तोड़ देगी। वहीं थोड़ी कम कमाई पर भी अगर सम्मान, सीख और अपनापन हो, तो वहाँ इंसान फलता है। नौकरी बदलते वक़्त सिर्फ़ package नहीं, ये चारों तराज़ू पर रखिए।

9श्लोक 9

धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पञ्चमः।

पञ्च यत्र न विद्यन्ते न तत्र दिवसं वसेत् ॥

> ? ???? ??????? ?????????

अर्थ

पिछले श्लोक के विस्तार में चाणक्य पाँच और तत्त्व बताते हैं जिनके बिना किसी स्थान पर एक दिन भी नहीं रहना चाहिए — धनिक, श्रोत्रिय, राजा, नदी, और वैद्य।

धनिक। समृद्ध व्यक्ति। उनका होना उस स्थान की आर्थिक स्वस्थता का संकेत है। जहाँ कोई भी समृद्ध न हो — वह दरिद्र स्थान है। वहाँ व्यापार, उद्यम, और अवसर सीमित हैं। समृद्धों की उपस्थिति में ही गरीब भी आगे बढ़ सकता है — रोजगार पाकर, सेवा प्रदान करके।

श्रोत्रिय। वेद-शास्त्रों का ज्ञाता ब्राह्मण। यहाँ "श्रोत्रिय" का व्यापक अर्थ है — पण्डित, विद्वान, धर्म-गुरु। वह व्यक्ति जो आध्यात्मिक मार्गदर्शन दे सके। बिना श्रोत्रिय के स्थान आध्यात्मिक रूप से सूना है। संस्कार,

परम्परा, और नैतिकता का ह्रास होगा।

राजा। शासक, प्रशासन। आज के सन्दर्भ में — कानून-व्यवस्था, सुरक्षा। जहाँ शासन नहीं — वहाँ अराजकता है। चोर, डाकू, और दुर्जन हावी होंगे। चाणक्य के समय राजा-तन्त्र था ; आज लोकतन्त्र है, परन्तु सिद्धान्त वही है — कानून-व्यवस्था आवश्यक है।

नदी। जल का स्रोत। मनुष्य जल के बिना नहीं रह सकता। नदी न केवल पीने का जल देती है, बल्कि कृषि, परिवहन, और सिंचाई का भी आधार है। आज के सन्दर्भ में — स्थायी जल-स्रोत आवश्यक है। पानी की कमी वाला स्थान त्याज्य है।

वैद्य। चिकित्सक। स्वास्थ्य के बिना सब निरर्थक है। बीमारी कब आ जाए, पता नहीं। यदि चिकित्सक उपलब्ध नहीं — तो छोटी बीमारी भी मृत्यु बन सकती है। आज के सन्दर्भ में — अच्छी स्वास्थ्य-सुविधा आवश्यक है।

ये पाँच केवल सूची नहीं — एक समग्र समाज की रूपरेखा हैं। आर्थिक (धनिक), सांस्कृतिक (श्रोत्रिय), राजनैतिक (राजा), प्राकृतिक (नदी), और चिकित्सकीय (वैद्य) — पाँच आयाम। जिस स्थान पर ये पाँच मिल जाएँ, वहाँ सम्पूर्ण मानव-विकास सम्भव है।

चाणक्य का यह सूत्र शहरी-नियोजन (urban planning) का प्राचीन सिद्धान्त है। आज के स्मार्ट सिटी अवधारणा से 2300 वर्ष पहले की दूरदर्शिता।

? आधुनिक उदाहरण

यह श्लोक असल में एक 'शहर चुनने की checklist' है — घर या business कहाँ बसाएँ ? चाणक्य पाँच चीज़ें ज़रूरी बताते हैं: आर्थिक हलचल (market), अच्छी शिक्षा (schools), व्यवस्था और सुरक्षा (governance), पानी (जल-स्रोत), और स्वास्थ्य-सुविधा (hospital)।

आज property खरीदने वाला यही देखता है — पास में market है ? अच्छे school हैं? law-and-order ठीक है ? पानी की supply है ? अस्पताल कितनी दूर है ? 2300 साल पहले चाणक्य ने relocation और real-estate का यह सूत्र दे दिया था। जहाँ ये पाँच न हों, वहाँ एक दिन भी दिल मत लगाइए।

10श्लोक 10

लोकयात्रा भयं लज्जा दाक्षिण्यं त्यागशीलता।

पञ्च यत्र न विद्यन्ते न कुर्यात् तत्र संगतिम् ॥

> ? ??????? ?? ???? ???

अर्थ

चाणक्य व्यक्ति-चरित्र के पाँच आवश्यक गुण बताते हैं। जिस व्यक्ति में ये नहीं — उसके साथ संगति त्याज्य है। पाँच गुण हैं — लोक-व्यवहार, भय, लज्जा, दक्षिण्य (विनम्रता), और त्याग-शीलता।

लोकयात्रा। लोक-व्यवहार। समाज में सही ढंग से व्यवहार करने की कला। जो व्यक्ति लोक-व्यवहार नहीं जानता — वह न मित्रों के बीच अच्छा रह सकता है, न शत्रुओं को सम्भाल सकता है। आज की भाषा में — social skills। बिना इसके मनुष्य अलग-थलग पड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति का संग व्यर्थ — क्योंकि वह सम्बन्धों की मूल भाषा ही नहीं जानता।

भय। यहाँ "भय" का अर्थ कायरता नहीं — बल्कि **परिणाम का भय**। जो व्यक्ति परिणामों से नहीं डरता, वह दुष्कर्म करने में संकोच नहीं करता। ऐसे निर्भय (परन्तु अनैतिक) व्यक्ति का संग खतरनाक है। उसके साथ रहकर हम भी उसी मार्ग पर चल सकते हैं। कुछ भय — दण्ड का, अपयश का, ईश्वर का — मनुष्य को सीधे रास्ते पर रखता है।

लज्जा। शर्म। गलत कार्य करते समय जो हिचक होनी चाहिए। निर्लज्ज व्यक्ति किसी भी गलत कार्य को बिना संकोच के कर सकता है। समाज के सामने वह कुछ भी कहता है, कुछ भी करता है। ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध बहुत हानिकारक होता है। हम भी कब उसकी निर्लज्जता का शिकार बन जाएँ, पता नहीं।

दाक्षिण्य। विनम्रता, सरलता, मधुरता। यह वह गुण है जो सम्बन्धों को मधुर बनाता है। जो व्यक्ति विनम्र नहीं — वह तर्क-वितर्क में हमेशा कठोर, घमण्डी, और तिरस्कारी होगा। उसके साथ रहना मानसिक यन्त्रणा है।

त्यागशीलता। देने का स्वभाव। जो व्यक्ति केवल लेना जानता है, देना नहीं — उसके साथ कोई भी सम्बन्ध एकतरफा होगा। मित्रता में दान-प्रति-दान आवश्यक है। बिना त्याग-शील व्यक्ति स्वार्थी होता है — और स्वार्थी मित्र सबसे बड़ा शत्रु है।

इन पाँच गुणों का अभाव — पाँच लाल झंडे हैं। किसी से सम्बन्ध जोड़ने से पहले इन्हें परखें। चाणक्य की दृष्टि सूक्ष्म है — वे सतही व्यवहार से नहीं, अन्तर्निहित गुणों से व्यक्ति को परखते हैं।

? आधुनिक उदाहरण

किसके साथ दोस्ती या partnership करें ? चाणक्य पाँच कसौटी देते हैं: क्या इंसान को सही व्यवहार आता है ? क्या उसे गलत काम का डर है ? क्या उसमें शर्म/मर्यादा है ? क्या वह विनम्र है ? और क्या वह देना जानता है, सिर्फ़ लेना नहीं ?

सोचिए एक business partner जिसमें talent तो है पर न किसी गलत काम का डर, न शर्म, न देने की भावना — वह partnership किसी दिन आपको डुबो देगी। वहीं एक साधारण-सा इंसान जिसमें ये पाँच गुण हों, वह

जीवनभर का भरोसेमंद साथी बनता है। किसी को अपने भीतरी दायरे में लेने से पहले सिर्फ़ हुनर नहीं, ये पाँच गुण देखिए।

11 श्लोक 11

जानीयात् प्रेषणे भृत्यान् बान्धवान् व्यसनागमे।

मित्रं चापत्तिकालेषु भार्यां च विभवक्षये॥

> ? ??? ????????? ?? ?????

अर्थ

चाणक्य चार सम्बन्धों की परख का सटीक मानक देते हैं। कौन सच्चा है, कौन झूठा — यह सामान्य परिस्थिति में नहीं, परीक्षा के क्षणों में पता चलता है।

भृत्य (नौकर/सहायक) — प्रेषण में। "प्रेषण" अर्थात् किसी कार्य पर भेजना। सच्चा सेवक वह है जो दिए गए कार्य को निष्ठा से, समय पर, और बिना देखरेख के सम्पन्न करे। जो हर बार बहाने बनाए, देरी करे, अधूरा छोड़े — वह अविश्वसनीय है। आज के सन्दर्भ में — कर्मचारी की परख तब होती है जब उसे कोई महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी दी जाए। तब उसकी सच्ची क्षमता दिखती है।

बान्धव (सम्बन्धी) — व्यसन (संकट) में। रिश्तेदार वह है जो संकट के समय खड़ा रहे। शादी-समारोह में सब आते हैं, परन्तु बीमारी, मृत्यु, या आर्थिक संकट में कौन आता है — यही असली परीक्षा है। चाणक्य कहते हैं — सम्बन्धों की पहचान दुख में होती है, सुख में नहीं।

मित्र — आपत्ति-काल में। मित्रता की सच्ची परख आपदा में होती है। जब हम सफल हैं, धनी हैं, प्रसिद्ध हैं — तो सैकड़ों मित्र होते हैं। परन्तु जब असफलता आती है, धन चला जाता है, प्रतिष्ठा गिर जाती है — तो कितने रहते हैं? जो रहता है — वही सच्चा मित्र है। बाकी सब "अवसरवादी" हैं।

भार्या — विभव-क्षय में। "विभव-क्षय" अर्थात् वैभव का नाश, धन का चला जाना। पत्नी की सच्ची परख तब होती है जब घर में दरिद्रता आ जाए। समृद्ध समय में सब खुश रहते हैं। परन्तु जब आर्थिक संकट हो, तब जो पत्नी पति का साथ देती है, संयम रखती है, उसे प्रोत्साहित करती है — वही सच्ची धर्म-पत्नी है। जो उस समय शिकायत करे, छोड़ दे, ताने दे — वह भार्या के नाम योग्य नहीं।

इस श्लोक का गहरा सन्देश है — सम्बन्धों को सामान्य परिस्थिति में मत आँको। हर सम्बन्ध की एक "परीक्षा" होती है। उस परीक्षा में जो सफल हो, वही सच्चा है। बाकी सब सतही हैं।

आधुनिक मनोविज्ञान भी यही कहता है — "true colors come out under stress"। दबाव में ही व्यक्ति का सच्चा रूप प्रकट होता है। चाणक्य ने यह बात 2300 वर्ष पहले स्पष्ट कह दी थी।

? आधुनिक उदाहरण

सच्चाई अच्छे दिनों में नहीं, परीक्षा के पल में दिखती है। सहायक की परख काम सौंपने पर — क्या वह ज़िम्मेदारी से, समय पर कर देता है? रिश्तेदार की परख मुसीबत में — कौन सच में साथ खड़ा होता है? दोस्त की परख कठिनाई में, और जीवनसाथी की परख तब जब पैसा और रुतबा चला जाए।

कितने ही लोग तब तक 'अपने' रहते हैं जब तक आपके पास देने को कुछ है। जिस दिन business डूबा या नौकरी गई, असली चेहरे सामने आ जाते हैं — और साथ ही असली रिश्ते भी। इसलिए बुरा वक़्त दुख तो देता है, पर एक तोहफ़ा भी : वह बता देता है कि सच में आपका कौन है।

12श्लोक 12

आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसङ्कटे।

राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः॥

> ? ?? ???? ????

अर्थ

चाणक्य पिछले श्लोक का विस्तार करते हुए छह विशेष परिस्थितियाँ बताते हैं जिनमें सच्चे सम्बन्धी की पहचान होती है। जो इन छह में साथ खड़ा रहे — वही असली बान्धव है।

आतुर (बीमारी)। जब कोई गम्भीर रूप से बीमार हो — तब उसके साथ कौन रहता है? रात-दिन सेवा करता है? डॉक्टर के साथ अस्पताल भागता है? यह सबसे कठिन परीक्षा है, क्योंकि बीमारी लम्बी हो सकती है, संक्रामक हो सकती है, या असाध्य भी। जो इस परीक्षा में भी न डरे, न थके — वह सच्चा बान्धव।

व्यसन (कष्ट/दुर्व्यसन)। "व्यसन" का अर्थ है — दुख का प्रकोप, या कभी-कभी बुरी आदतों में फँसना। जब कोई व्यक्ति शराब, जुआ, ड्रग्स में फँस जाए — तब परिवार उसे छोड़ देता है। परन्तु सच्चा बान्धव उसे बाहर निकालने का प्रयास करता है। यह कठिन है, परन्तु आवश्यक है।

दुर्भिक्ष (अकाल)। जब चारों ओर भोजन की कमी हो। प्राचीन समय में अकाल भयानक संकट था — पूरे गाँव भूखे मरते थे। ऐसे समय में जो अपना भोजन बाँट दे, वह सच्चा बान्धव है। आज के सन्दर्भ में — आर्थिक

मन्दी, बेरोजगारी के समय। जब हर तरफ कमी हो, और कोई आपकी सहायता करे — वही सच्चा है।

शत्रु-सङ्कट। जब कोई शत्रु आक्रमण करे। आज के सन्दर्भ में — कानूनी विवाद, सामाजिक तिरस्कार, बदनामी की मुहिम। ऐसे समय में आपके पक्ष में खुलकर बोलने वाला कौन है? जो मित्र चुप रह जाए, वह मित्र नहीं — मूक साक्षी है।

राजद्वार (न्यायालय/प्रशासन)। जब कोई मुकदमे में फँस जाए। न्यायालय में पेशी, पुलिस की पूछताछ — ये सब डराने वाली स्थितियाँ हैं। जो आपके साथ राजद्वार तक जाए, वकील दिलाए, गवाही दे — वह सच्चा बान्धव।

श्मशान (मृत्यु-उपरान्त)। यह सबसे अन्तिम परीक्षा है। जब कोई स्वजन की मृत्यु हो — तो श्मशान तक कौन जाता है? अन्तिम क्रिया में कौन सहायता करता है? परिवार के सदस्य तो जाते ही हैं, परन्तु मित्र, सम्बन्धी, और परिचित — कितने जाते हैं? जो जाए, वही सच्चा बान्धव।

ये छह स्थितियाँ केवल सम्बन्धों की परीक्षा नहीं — मानवीयता की परीक्षा हैं। चाणक्य का सन्देश है — इन क्षणों में जो लोग आपके साथ खड़े रहें, उन्हें कभी मत भूलें। और अपने जीवन में भी, जब किसी अन्य को इन स्थितियों का सामना हो, तब आप उनके लिए वह "सच्चे बान्धव" बनें।

🔍 आधुनिक उदाहरण

सच्चा अपना कौन है? चाणक्य छह मौके गिनाते हैं — जब आप बीमार हों, जब मुसीबत/अभाव हो, जब कोई दुश्मनी में फँसाए, जब कहीं आपके लिए खड़ा होना पड़े, जब आप न रहें (आपके परिवार के साथ), और जब सब कुछ बिखर जाए।

ICU के बाहर रात-रात भर जो बैठा रहे, कोर्ट-कचहरी में साथ खड़ा हो, और आपके जाने के बाद भी आपके बच्चों का ख़याल रखे — वही 'बान्धव' है, चाहे ख़ून का रिश्ता हो या न हो। आज जब रिश्ते सिर्फ़ त्योहारों के messages तक सिमट गए हैं, यह सूत्र याद दिलाता है — रिश्ते शब्दों से नहीं, बुरे वक़्त में साथ खड़े होने से बनते हैं।

13 श्लोक 13

यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवं परिषेवते।

ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव हि॥

> ? ????? ??? ???? ????

अर्थ

यह श्लोक चाणक्य की सबसे विख्यात वाणियों में है। संक्षिप्त परन्तु गहरा। "ध्रुव" अर्थात् निश्चित, स्थिर। "अध्रुव" अर्थात् अनिश्चित, चंचल। जो व्यक्ति निश्चित को छोड़कर अनिश्चित के पीछे भागता है — वह दोनों से हाथ धो बैठता है।

यह जीवन की मूल मूर्खता है। हम बहुत बार ऐसा करते हैं। हमारे पास जो स्थिर है — हम उसकी कद्र नहीं करते। और जो अनिश्चित है — उसके पीछे भागते हैं। परिणाम — दोनों खो देते हैं।

उदाहरण 1 — व्यापार। एक व्यक्ति की स्थिर नौकरी है, अच्छा वेतन, परिवार सुरक्षित। वह सोचता है — व्यापार में और कमाऊँगा। नौकरी छोड़कर सब पैसा व्यापार में लगा देता है। व्यापार चला नहीं, सब पैसा डूब गया। अब न नौकरी रही, न व्यापार। यह श्लोक उसी का कथन है।

उदाहरण 2 — सम्बन्ध। एक व्यक्ति का स्थिर वैवाहिक जीवन है, अच्छा परिवार, बच्चे। वह किसी और के मोह में पड़ता है। पुरानी पत्नी को छोड़कर नई से सम्बन्ध बनाता है। थोड़े समय बाद नया सम्बन्ध भी टूट जाता है। अब न परिवार रहा, न नया सुख।

उदाहरण 3 — निवेश। एक व्यक्ति का स्थिर निवेश है — सावधि जमा, बॉण्ड, अच्छा रिटर्न। वह सुनता है कि क्रिप्टो में लोग रातों-रात अरबपति बन रहे हैं। सब पैसा निकालकर क्रिप्टो में लगा देता है। बाजार गिरता है, सब डूब जाता है। अब न पुराना निवेश रहा, न नया।

चाणक्य का यह सूत्र सावधानी का है — मूर्खता का नहीं। वे यह नहीं कह रहे कि अनिश्चित अवसरों से दूर रहो। केवल यह कह रहे हैं — स्थिर को छोड़ने से पहले सोचो। सम्भव हो तो स्थिर को बचाते हुए नया प्रयास करो। एक हाथ में जो है — उसे रखो, दूसरे से नया पकड़ो।

आधुनिक निर्णय-शास्त्र (decision theory) में इसे "opportunity cost" कहते हैं — हर निर्णय का एक मूल्य है, जो आप त्यागते हैं। चाणक्य की बात स्पष्ट है — अनिश्चित के लिए निश्चित का त्याग — बहुधा महंगा पड़ता है।

यह नीति केवल आर्थिक नहीं — आध्यात्मिक भी है। ईश्वर का स्मरण ध्रुव है, सांसारिक मोह अध्रुव। बहुत-से लोग ईश्वर को छोड़कर माया में लिप्त हो जाते हैं — परिणाम वही, दोनों से वंचित।

? आधुनिक उदाहरण

चाणक्य की सबसे मशहूर चेतावनी : जो पक्के को छोड़कर कच्चे के पीछे भागता है, वह दोनों खो देता है। एक इंसान अच्छी-ख़ासी नौकरी छोड़कर, बिना तैयारी, किसी 'get-rich-quick' scheme में सब पैसा लगा देता है — और अक्सर नौकरी भी जाती है और पैसा भी।

इसका मतलब जोखिम न लेना नहीं, समझदारी से लेना है। सफल entrepreneurs भी छलांग से पहले runway बनाते हैं, बचत रखते हैं, side-income खड़ी करते हैं, फिर छोड़ते हैं। लालच की अंधी छलांग और सोची-समझी छलांग में यही फ़र्क है। जो हाथ में है उसकी कद्र करो, और नए के पीछे तभी दौड़ो जब पुराने की सुरक्षा बनी रहे।

14 श्लोक 14

वरयेत् कुलजां प्राज्ञो विरूपामपि कन्यकाम् ।

रूपशीलां न नीचस्य विवाहः सदृशे कुले ॥

> [illegible]

अर्थ

चाणक्य विवाह के लिए कन्या चुनने का सूत्र देते हैं। उनका सिद्धान्त है — कुलीन कन्या चुनो, चाहे वह कुरूप ही हो ; निम्न कुल की सुन्दर कन्या को नहीं। और विवाह समान कुल में करो।

यह श्लोक आधुनिक दृष्टि से विवादास्पद लग सकता है। परन्तु इसे सही सन्दर्भ में समझें। "कुल" का अर्थ केवल जाति नहीं — **परिवार के संस्कार, मूल्य, परम्परा**। जिस घर में अच्छे संस्कार हों, ईमानदारी हो, मेहनत की कद्र हो, धर्म का पालन हो — वह "उत्तम कुल" है।

चाणक्य का तर्क है — रूप क्षणिक है। आज जो सुन्दर है, कल बूढ़ी होगी। परन्तु संस्कार स्थायी हैं। जो कन्या अच्छे संस्कारों में पली-बढ़ी है, वह अच्छी पत्नी, अच्छी माँ, अच्छी गृह-स्वामिनी बनेगी। उसका रूप सामान्य भी हो — परन्तु उसका चरित्र उत्तम होगा।

इसके विपरीत — कोई कन्या अत्यन्त सुन्दर है, परन्तु उसका परिवार झगड़ालू, अनैतिक, या अप्रामाणिक है। वहाँ के संस्कार उसमें भी होंगे। विवाह के बाद वही दिखेगा। रूप का सुख कुछ ही दिनों का, झगड़ों का दुख जीवन-भर का।

"रूपशीला" शब्द ध्यान दें — सुन्दर शीलवाली। यदि उसका कुल निम्न है (दुर्जन है), तो उसकी सुन्दरता और शील भी काम नहीं आते। क्योंकि उसके परिवार से उत्पन्न समस्याएँ निरन्तर परेशान करेंगी। दहेज की माँग, अन्य गलत व्यवहार — सब आते हैं।

"सदृशे कुले" — समान कुल में। यह सिद्धान्त आज भी समाजशास्त्र में मान्य है। समान आर्थिक, सांस्कृतिक, और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के लोगों का विवाह अधिक सफल होता है। बहुत असमान विवाह में समायोजन कठिन

होता है।

आधुनिक सन्दर्भ में इस श्लोक का अर्थ है — **विवाह में बाहरी आकर्षण से अधिक मूल्य आन्तरिक गुणों और पारिवारिक संस्कारों को दें**। यह स्त्री और पुरुष दोनों पर समान रूप से लागू है। केवल "रूप" देखकर विवाह करना अनुभवहीनता है। संस्कार, चरित्र, परिवार — ये दीर्घकालिक सुख के स्रोत हैं।

विवाह जीवन-भर का बन्धन है। एक रात में निर्णय न लें। चाणक्य की दृष्टि सिखाती है — विवेक से चुनें, मोह से नहीं।

⁉ आधुनिक उदाहरण

इस श्लोक को आज के सन्दर्भ में समझें — चाणक्य असल में कह रहे हैं कि रिश्तों में, ख़ासकर विवाह में, ऊपरी चमक से ज़्यादा संस्कार और चरित्र देखो। जिस इंसान और परिवार में मूल्य, ईमानदारी और अच्छे संस्कार हों, वह जीवनभर साथ निभाता है ; सिर्फ़ बाहरी सुंदरता या दिखावा कुछ ही दिन में फीका पड़ जाता है।

Dating apps और instant attraction के दौर में यह और ज़रूरी है। एक चमकदार profile या lifestyle देखकर बहुत लोग रिश्ते में कूद पड़ते हैं और बाद में values के टकराव से टूटते हैं। चाणक्य का इशारा साफ़ है — लंबी पारी character से चलती है, चेहरे से नहीं। 'कुल' यानी वे संस्कार जिनमें इंसान पला, वही असली पूँजी है।

15श्लोक 15

नदीनां शस्त्रपाणीनां नखीनां शृङ्गिणां तथा ।

विश्वासो नैव कर्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥

> ⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉⁉ ⁉ ⁉⁉⁉⁉⁉

अर्थ

चाणक्य छह वस्तुओं/व्यक्तियों की सूची देते हैं जिन पर अन्धा विश्वास नहीं करना चाहिए। यह सूची विवादास्पद नहीं — व्यावहारिक है। यह "अन्धा विश्वास" का निषेध है, "सम्बन्ध" का नहीं।

नदी। नदियाँ शान्त दिखती हैं, परन्तु उनकी गहराई और प्रवाह का अनुमान कठिन है। अचानक बाढ़ आ सकती है, धारा बदल सकती है। आज की भाषा में — प्राकृतिक शक्तियों पर अन्धा भरोसा खतरनाक है। बाँध बनाएँ, सावधानी रखें — परन्तु प्रकृति को कमजोर मत समझें।

शस्त्रधारी। जिसके हाथ में हथियार है — वह कब उसका उपयोग करेगा, पता नहीं। हथियार स्वयं तटस्थ है, परन्तु धारण करने वाला मनुष्य है — और मनुष्य की भावनाएँ बदलती हैं। हथियारधारी पर अन्धा विश्वास न करें — चाहे वह मित्र हो, सैनिक हो, या सुरक्षाकर्मी।

नखीनां (पंजों वाले जीव)। बाघ, सिंह, बिल्ली — जिनके पंजे तेज़ हैं। वे पालतू भी हों, तो उनका मूल स्वभाव हिंसक रहता है। एक क्षण में भी ये हमला कर सकते हैं। आधुनिक सन्दर्भ में — कोई भी जो "स्वभावतः खतरनाक" है, उस पर पूर्ण भरोसा न करें।

शृङ्गिणां (सींग वाले जीव)। बैल, भैंस, गाय, हिरण। ये पालतू भी हैं, परन्तु क्रोधित होने पर सींगों से मार सकते हैं। प्रतीकात्मक रूप से — कोई भी जो "विनम्र दिखता है परन्तु अचानक आक्रामक हो सकता है।"

स्त्री। यह श्लोक का सबसे विवादित अंश है। परन्तु इसे सन्दर्भ में समझें। चाणक्य पुरुष-केन्द्रित युग में लिख रहे थे ; और उनका सन्देश दोनों दिशाओं में जाता है। "किसी एक पर अन्धा विश्वास न करना" — चाहे स्त्री हो या पुरुष। मनुष्य की भावनाएँ बदलती हैं, परिस्थितियाँ बदलती हैं। आधुनिक भाषा में — कोई भी सम्बन्ध सावधानी से निभाओ, अन्धा विश्वास नहीं।

राजकुल। राजाओं और शासकों पर। वे सत्ता-केन्द्रित होते हैं। अपनी सत्ता के लिए वे किसी को भी त्याग सकते हैं। चाणक्य स्वयं चन्द्रगुप्त के मन्त्री रहे — वे जानते थे कि शासन-तन्त्र कैसे चलता है। उनकी सलाह — राजा से दूर रहो, पर राजा को सहयोग दो ; अन्धा विश्वास मत करो।

इस श्लोक का सार — **विश्वास का अधिकार किसी को नहीं**। हर विश्वास कमाना पड़ता है, परीक्षा पर खरा उतरना पड़ता है। समय और परिस्थिति के साथ विश्वास का स्तर बदलता रहना चाहिए।

⁉ आधुनिक उदाहरण

यह श्लोक अविश्वास नहीं, समझदारी सिखाता है। चाणक्य कहते हैं कुछ चीज़ों पर आँख मूँदकर भरोसा मत करो — शान्त दिखती नदी अचानक बाढ़ ला सकती है, हथियार या पंजे-सींग वाला जानवर पल में पलट सकता है, और ताक़तवर लोग/सत्ता कब रुख़ बदल दें, कहा नहीं जा सकता।

Modern life में इसका मतलब — किसी deal को पूरी तरह मौखिक भरोसे पर मत छोड़ो, agreement लिखो ; एक 'शान्त' दिखते हालात में भी backup रखो ; और बड़े लोगों की मेहरबानी को स्थायी मत समझो। यह cynicism नहीं, सतर्कता है — 'भरोसा करो, पर verify भी करो' का प्राचीन रूप।

16 श्लोक 16

विषादप्यमृतं ग्राह्यं बालादपि सुभाषितम् ।

अमित्रादपि सद्वृत्तं अमेध्यादपि काञ्चनम् ॥

> ? ??? ???????? ?? ?????

अर्थ

चाणक्य यह श्लोक उदारता का सिखाते हैं। ज्ञान, सद्गुण, और मूल्यवान वस्तुएँ — कहाँ से भी मिलें, ग्रहण करो। स्रोत से घृणा मत करो।

विष से अमृत। विष से भी यदि अमृत मिलता हो — तो लो। प्राचीन समय में अनेक औषधियाँ विषैले पौधों से बनती थीं। आज के सन्दर्भ में — कई दवाएँ कैंसर-कोशिकाओं से, साँप के विष से, बैक्टीरिया से बनती हैं। जो पदार्थ हानिकारक माना जाता है, उसमें भी जीवन-दायी तत्त्व हो सकता है। कुशल वैद्य/वैज्ञानिक उसे निकाल लेता है।

प्रतीकात्मक रूप से — किसी "विषैले" व्यक्ति से भी यदि कोई अच्छी बात सीखी जा सके, तो सीखो। शत्रु से भी ज्ञान लो। शत्रु आपकी कमजोरियाँ बताता है — जो मित्र नहीं बताते।

बालक से सुभाषित। छोटे बच्चे की भी अच्छी बात सुनो। बच्चे की निर्दोष दृष्टि अक्सर बड़ों की चालाकी से बेहतर होती है। उम्र देखकर ज्ञान को न आँको। बहुत-से बड़े विद्वानों ने बच्चों से सबक सीखे हैं। आधुनिक शिक्षा में "fresh perspective" का यही महत्त्व है।

शत्रु से सद्वृत्त। शत्रु में भी यदि कोई अच्छा गुण है, तो उसे सीखो। शत्रु से नफरत — उसके गुणों से नहीं, उसके दुष्कर्मों से। यह अत्यन्त परिपक्व दृष्टि है। हम साधारणत: शत्रु में केवल बुराइयाँ देखते हैं। चाणक्य कहते हैं — गुण भी देखो।

उदाहरण — कोई शत्रु राष्ट्र की सेना अनुशासित है, तो हम भी अनुशासन सीखें। कोई प्रतिद्वंद्वी व्यापारी रणनीति में कुशल है, तो हम भी सीखें। यह स्वस्थ प्रतिस्पर्धा है।

अमेध्य (मलिन) से स्वर्ण। मलिन स्थान से भी यदि स्वर्ण मिले — तो ले लो। प्राचीन समय में सोना कभी-कभी कूड़े में, या मलिन स्थानों में भी मिलता था। आज के सन्दर्भ में — कोई अवसर "गंदी जगह" से भी आए, तो उसे न ठुकराओ, यदि वह वैध और लाभदायी है।

इन चारों उदाहरणों का एक ही सन्देश है — **ज्ञान, गुण, और सम्पदा के स्रोत पर निर्णय मत करो ; उनकी गुणवत्ता पर निर्णय करो**। यह वैज्ञानिक दृष्टि है। यह आधुनिक "open mind" का सिद्धान्त है।

संकीर्णता से ऊपर उठो। हर कोने से सीखो। हर अवसर का उपयोग करो। चाणक्य की यह उदार दृष्टि उन्हें अद्वितीय बनाती है।

? आधुनिक उदाहरण

चाणक्य यहाँ बड़ी बात सिखाते हैं — अच्छी चीज़ जहाँ से मिले, ले लो ; स्रोत की परवाह मत करो। कड़वी दवा भी सेहत देती है, कीचड़ में खिला कमल भी सुंदर है, और एक छोटे बच्चे की बात भी कभी गहरी सीख दे जाती है।

Successful लोग यही करते हैं — वे अपने से जूनियर, प्रतिद्वंद्वी, यहाँ तक कि आलोचकों से भी सीख उठा लेते हैं। किसी ने कड़वी पर सच्ची सलाह दी, तो लहजा भूलकर सलाह रख लीजिए। ज्ञान और गुण पर किसी एक का ठप्पा नहीं होता — जो हर जगह से सीखता रहता है, वही सबसे तेज़ बढ़ता है। अहंकार 'यह मुझसे छोटा है' कहकर सीखने से रोकता है ; बुद्धिमान उस अहंकार को किनारे रख देता है।

17 श्लोक 17

स्त्रीणां द्विगुण आहारो लज्जा चापि चतुर्गुणा।

साहसं षड्गुणं चैव कामश्चाष्टगुणः स्मृतः ॥

> [illegible]

अर्थ

चाणक्य अध्याय का अन्तिम श्लोक स्त्री-प्रकृति पर एक काव्यात्मक अवलोकन के साथ करते हैं। यह कोई आलोचना नहीं — एक तुलनात्मक विश्लेषण है। वे कहते हैं कि स्त्रियों में पुरुषों की तुलना में चार गुण विशेष मात्रा में होते हैं।

आहार — दो गुना। चाणक्य कहते हैं स्त्री का आहार पुरुष से दो गुना अधिक है। यह जैविक रूप से अंशतः सही है — स्त्री शरीर को मासिक चक्र, गर्भावस्था, और स्तनपान के समय अधिक पोषण चाहिए। आधुनिक चिकित्सा भी मानती है कि स्त्रियों को आयरन, कैल्शियम, और प्रोटीन की आवश्यकता पुरुषों से अधिक होती है। चाणक्य का यह सूत्र पोषण-शास्त्र का प्राचीन संकेत है।

लज्जा — चार गुना। लज्जा अर्थात् संकोच, मर्यादा। चाणक्य कहते हैं स्त्रियों में यह गुण चार गुना अधिक होता है। यह सांस्कृतिक और जैविक दोनों कारणों से है। पारम्परिक रूप से स्त्रियों को संयम और मर्यादा सिखाई जाती है। यह उनकी एक शक्ति है — मर्यादा से जो रिश्ते बनते हैं, वे स्थायी होते हैं।

आधुनिक सन्दर्भ में — यह केवल "लज्जा" नहीं, बल्कि **संवेदनशीलता और मर्यादा का बोध**। स्त्रियों में सामाजिक स्थिति की समझ, और भावनात्मक बारीकियों का बोध अक्सर अधिक तीव्र होता है।

साहस — छह गुना। चाणक्य का यह कथन कई लोगों को आश्चर्यजनक लगता है। पारम्परिक दृष्टि से तो

पुरुष को साहसी माना जाता है। परन्तु चाणक्य कहते हैं — स्त्री का साहस छह गुना अधिक है।

यह सत्य है। प्रसव की पीड़ा सहना, गर्भावस्था के नौ माह, परिवार के लिए त्याग, बच्चों के लिए संघर्ष — यह सब पुरुष से अधिक साहस माँगता है। युद्ध-भूमि का साहस एक दिन का होता है ; जीवन-भर का त्याग और धैर्य — अधिक बड़ा साहस।

इतिहास में अनेक उदाहरण हैं — रानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्तान, अहिल्याबाई होलकर — जिन्होंने पुरुषों से बड़ा साहस दिखाया।

काम — आठ गुना। "काम" अर्थात् इच्छा-शक्ति, प्रेम-भाव। चाणक्य कहते हैं स्त्री में यह गुण आठ गुना अधिक होता है। यह केवल यौन-इच्छा नहीं — सम्बन्धों में गहराई, प्रेम की तीव्रता, माता-पिता-पति-पुत्र के लिए भावनात्मक लगाव।

आधुनिक मनोविज्ञान भी पुष्टि करता है कि स्त्रियों का भावनात्मक बन्धन पुरुषों से अधिक गहरा होता है। यह उनकी कमजोरी नहीं — शक्ति है। माँ का प्रेम, पत्नी का समर्पण, बहन का स्नेह — इन्हीं भावनाओं से समाज चलता है।

यह श्लोक स्त्री-निन्दा नहीं, स्त्री-महिमा का गुणगान है। चाणक्य का सूक्ष्म अवलोकन — स्त्रियाँ केवल अबला नहीं, बल्कि चार-छह-आठ गुना तीव्र शक्तियों की वाहक हैं। यह सम्मान का सूत्र है।

? आधुनिक उदाहरण

चाणक्य अध्याय का समापन एक काव्यात्मक, तुलनात्मक अवलोकन से करते हैं — यह किसी की आलोचना नहीं, अलग-अलग स्वभावों पर एक टिप्पणी है। असल सीख यह है कि हर व्यक्ति और हर स्वभाव की अपनी विशेष शक्तियाँ होती हैं, और समझदारी इन्हें पहचानने में है।

आज इसे यूँ देखें — किसी टीम या परिवार में हर सदस्य की अपनी ताक़त होती है : कोई धैर्य में आगे, कोई साहस में, कोई समझ में, कोई सेवा में। अच्छा leader या मुखिया वही है जो इन भिन्न स्वभावों का सम्मान करे और सही काम सही व्यक्ति को सौंपे। एक-दूसरे को कमतर आँकने के बजाय इन प्राकृतिक शक्तियों का तालमेल ही घर और संगठन को मज़बूत बनाता है।

? Interactive Reader में पढ़ें

VastuGuruji Chanakya Reader में हर श्लोक के साथ — Tabs (अर्थ/उदाहरण/? Brain), Bookmarks, Notes, Audio, और AI-powered "चाणक्य से पूछें" feature।

Visit:
https://vastuguruji.in/blog/chanakya-neeti/chanakya-neeti-adhyay-1-mangalacharan-aur-mool-sutra/?utm_source=pdf&utm_medium=qr&utm_campaign=chanakya_pdf

WhatsApp: +91 97704 40000 · **Email:** support@vastuguruji.in

? Scan to open